अध्याय –14

राष्ट्रीय आय की मूल अवधारणाएँ
(Basic Concepts of National Income)

आज सभी देशों में पशुपालन, कृषि, उद्योग, व्यापार एवं अन्य वाणिज्यिक क्रियाएँ जैसे परिवहन, संचार, बैंकिंग (अधिकोषण), भण्डारण इत्यादि की जाती है। उपर्युक्त कई प्रकार की आर्थिक–क्रियाओं के द्वारा लोग अपनी आजीविका कमाते हैं। कुछ लोग शारीरिक श्रम द्वारा आय अर्जित करते हैं और कुछ लोग मानसिक श्रम द्वारा भी आय का अर्जन करते हैं। आय विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त होती है। जिन देशों के अधिकांश लोगो को कई स्रोतों से आय प्राप्त होती हैं उनकी आय उन देशों के लोगो से अधिक होती है जिनके पास आय के कम स्रोत हो। कम आय वाले देश निर्धन तथा अधिक आय वाले देश धनी कहलाते हैं। आज प्रत्येक देश धनी बनना चाहता है। बोलचाल की भाषा में एक देश की आय को राष्ट्रीय आय कहते हैं।

राष्ट्रीय आय की सहायता से एक देश की आर्थिक उपलब्धियों की जानकारी मिलती है। उस देश की सरकार की नीतियों एवम् कार्यक्रमों के प्रभावशाली होने की स्थिति का पता चलता है। राष्ट्रीय आय एक देश की अर्थव्यवस्था के प्रवाह (Flow) दर्शाता है।

स्टॉक एवं प्रवाह (Stock and Flow) :–

आर्थिक चरों के अध्ययन में समय तत्व के आधार पर उन्हें स्टॉक अथवा प्रवाह के वर्ग में रखा जाता है। जब किसी भी आर्थिक चर का अध्ययन एक निश्चित समय बिन्दु पर किया जाता है तो उसे स्टॉक कहा जाता है। इसके विपरित जब किसी चर का एक समयावधि में अध्ययन किया जाता है तो उसे प्रवाह कहा जाता है।

शेपीरो के अनुसार – ''एक स्टॉक समय के एक निर्दिष्ट बिन्दु में माप मात्रा है और प्रवाह एक मात्रा है जो कि केवल समय के एक निर्दिष्ट काल में मापी जा सकती है''

इस अवधारणा को निम्नलिखित उदाहरण द्वारा सरलता से समझा जा सकता है।

माना किसी वर्ष की 1 जुलाई को एक बांध में 20 फिट पानी का स्तर है, बरसात के कारण तीन महीनों में यह बढ़ कर 40 फिट हो जाता है। पूरे वर्ष भर में पीने, खेती व उद्योग–धंधों में पानी की खपत होने के कारण अगले वर्ष के 30 जून को पानी का स्तर 25 फिट रह जाता है। इस उदाहरण की तीन बातें महत्वपूर्ण हैं। 1. एक जुलाई को शुरू में पानी का स्तर 20 फिट है। 2. वर्ष में (3 माह में) पानी की आवक 20 फिट हुई व वर्ष में जावक 15 फिट हुई। 3. वर्ष के आखिरी दिन 30 जून को पानी का स्तर 25 फिट रह जाता है।

ऊपर बताई गई तीन बातों में–एक जुलाई व 30 जून को पानी का स्तर (भण्डार अर्थात स्टॉक) (Stock) क्रमशः 20 फिट व 25 फिट होता है। एक जुलाई व 30 जून समय के बिन्दु (Point of Time) हैं। इसी तरह एक जुलाई व 30 जून के दो समय के बिन्दुओं के बीच की समय की अवधि (Period Between Two Point of Time) में पानी की आवक (अन्दर की ओर प्रवाह) 20 फिट हुई व जावक (बाहर की ओर प्रवाह) 15 फिट हुई। इस प्रकार पानी की शुद्ध आवक (Net In-Flow) 5 फिट (20-15=5) हुई।

राष्ट्रीय आय भी इसी तरह एक प्रकार का प्रवाह (Flow) होता है। यह प्रवाह (Flow) एक वर्ष की अवधि (भारत में किसी वर्ष के एक अप्रेल से अगले वर्ष के 31 मार्च के दो समय बिन्दुओं के बीच की अवधि) से सम्बन्ध रखता है। इसी तरह समय के एक निर्दिष्ट बिन्दु पर सम्पत्तियों का स्तर स्टॉक (भण्डार या स्कन्ध) कहा जाता है। राष्ट्रीय आय का इस प्रकार का प्रवाह **(Flow)** उत्पादक आर्थिक–क्रियाओं से उत्पन्न होता है। एक देश के लोग राष्ट्रीय आय का प्रवाह उत्पादक आर्थिक–क्रियाओं से वहाँ के समस्त संसाधनों के द्वारा अर्जित करते हैं। राष्ट्रीय आय का प्रवाह उत्पादक आर्थिक–क्रियाओं से देश के लोगों के बीच में चक्राकार रूप में उसी तरह घूमता रहता है जैसे शरीर में रक्त का संचार होता है।

आय का चक्राकार प्रवाह (Circular Flow of Income) :–

आय के चक्राकार प्रवाह के विचारों का पहली बार फ्रांस के प्रकृतिवादी–कृषि अर्थशास्त्री फ्रेंकायज क्वीजने (Francois Quesney) ने सन् 1758 के द्वारा किया गया। कार्ल मार्क्स (Karl Marx) ने फ्रेंकायज क्वीजने की आर्थिक– तालिका को दुबारा

प्रकाशित किया।

एक देश की अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्र होते हैं जैसे परिवार (उपभोक्ता), व्यवसाय (उत्पादक) व सरकारें इत्यादि। सभी क्षेत्र एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। विभिन्न घटकों जैसे परिवार (उपभोक्ता) व व्यवसाय (उत्पादक) इत्यादि की एक दूसरे पर निर्भरता को आय के चक्राकार प्रवाह (Circular Flow of Income) की सहायता से समझ सकते हैं। उत्पादन के साधनों की उत्पादक आर्थिक–क्रियाओं के द्वारा वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन होता है। 'आयलर प्रमेय' (Euler's Theorem) के अनुसार समस्त उत्पादन का पूरा–पूरा बंटवारा उत्पादन के साधनों को हो जाता है। इस प्रकार साधनों को उत्पादन का वितरण होने पर उन्हें साधन–आय प्राप्त होती हैं। देश के लोगों द्वारा साधन–आय को व्यय करके वस्तुओं व सेवाओं को प्राप्त किया जाता है। इस प्रकार एक देश के परिवारों व व्यावसायिक–फर्मों के मध्य उत्पादक आर्थिक–क्रियाओं के द्वारा कमाई गई आमदनी घूमती रहती जिसे ही आय का चक्राकार प्रवाह कहते हैं। आय के चक्राकार प्रवाह (Circular Flow of Income) को दो क्षेत्रों के मॉडल की सहायता से निम्नानुसार समझ सकते हैं।

मॉडल–

एक 'मॉडल' जटिल वास्तविकता का सरल रूप होता है। जैसे मानव शरीर व उसकी कार्य प्रणाली को मिट्टी या प्लास्टिक के मॉडल द्वारा आसानी से समझ सकते हैं। इसी तरह एक देश की अर्थव्यवस्था के परिवारों व व्यावसायिक–फर्मों के मध्य आमदनी के चक्राकार प्रवाह को भी एक 'मॉडल' की सहायता से समझ सकते हैं। आय का चक्राकार प्रवाह का मॉडल निम्न बातों को आवश्यक मानता है:–

1. एक देश में सम्पूर्ण उत्पादन केवल व्यावसायिक–फर्में ही करती है।
2. व्यावसायिक–फर्में अपना सम्पूर्ण उत्पादन बेच देती है, बिना बेचा उत्पादन, कच्चा माल शेष नहीं बचता है।
3. एक देश में सरकार तो होती है किन्तु वह कर इत्यादि नहीं लेती तथा लोगों को सहायता, अनुदान नहीं देती है।
4. एक देश की अर्थव्यवस्था बन्द है अर्थात विदेशों से आयात व निर्यात नहीं होता है।

यद्यपि जब एक देश की अर्थव्यवस्था खुली होती है तब आय के चक्राकार प्रवाह (Circular Flow of Income) के क्षेत्रों की संख्या पाँच– (परिवार, व्यावसायिक–फर्में, पूँजी–बाजार, सरकार व शेष–विश्व) होती हैं। एक सरल आय के चक्राकार प्रवाह (Circular Flow of Income) के मॉडल में निम्न दो क्षेत्र होते हैं– 1. प्रथम क्षेत्र–परिवार क्षेत्र (Household Sector)

2. द्वितीय क्षेत्र–व्यावसाय क्षेत्र (Business Sector)

1. परिवार क्षेत्र :– परिवार क्षेत्र से आशय वह क्षेत्र जो उत्पादन के साधनों (श्रम, भूमि, पूँजी इत्यादि) का स्वामीं हैं। परिवार में केवल व्यावसायिक–फर्मों के द्वारा किये गये उत्पादन का उपभोग होता है।

2. व्यावसायिक क्षेत्र:– व्यावसायिक क्षेत्र का अर्थ वह क्षेत्र जो परिवार से उत्पादन के साधनों (श्रम, भूमि, पूँजी इत्यादि) की सहायता से उत्पादन करता है। उपभोग हेतु उत्पादन को परिवार को बेच देता है। इस स्थिति को रेखाचित्र 14.1 की सहायता से समझ सकते हैं।

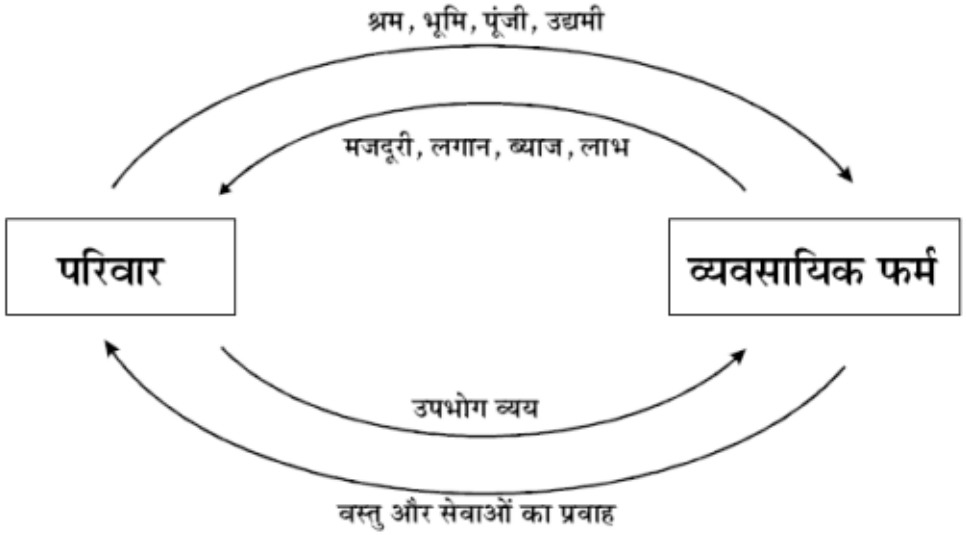

रेखाचित्र 14.1 : आय का चक्राकार प्रवाह

इस प्रकार एक देश में उत्पादन के साधन परिवार से व्यावसायिक–फर्मों की ओर/तरफ जाते हैं। व्यावसायिक–फर्मों के द्वारा साधनों के बदले में मुद्रा का भुगतान प्रतिफलों के रुप में किया जाता है। परिवार व्यावसायिक–फर्मों से जो मुद्रा का भुगतान आय के रुप में किया जाता है उसे दुबारा व्यावसायिक–फर्मों को भुगतान वस्तु और सेवाओं के लिए कर देते हैं। परिवार मुद्रा देकर बदले में व्यावसायिक–फर्मों से उपभोग हेतु वस्तुओं व सेवाओं को प्राप्त कर उनका उपभोग करता है। इस प्रकार परिवार का व्यय व्यावसायिक–फर्मों की आय व व्यावसायिक–फर्मों का व्यय परिवार की आय का निर्माण करते हैं। यह प्रवाह दो प्रकार का होता है– 1. वास्तविक प्रवाह– उत्पादन के साधनों का परिवार से व्यावसायिक–फर्मों की ओर तथा व्यावसायिक–फर्मों से उपभोग हेतु वस्तुओं व सेवाओं का परिवार की ओर प्रवाह। 2. मौद्रिक प्रवाह– व्यावसायिक–फर्मों से साधन–भुगतान का परिवार की ओर तथा परिवार से उपभोग–व्यय के रूप में व्यावसायिक–फर्मों की ओर प्रवाह। एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र को लेनदेन के प्रवाह का यह क्रम एक देश की अर्थव्यवस्था में लगातार चलता रहता है। उपर्युक्त का निष्कर्ष निम्न है:–

1. वस्तुओं व सेवाओं के लेनदेन (क्रय–विक्रय) की राशियाँ बराबर होती है। अर्थात् एक देश के समस्त उत्पादकों को मिलने वाली राशि उतनी ही होती है जितनी देश के समस्त उपभोक्ताओं द्वारा खर्च की जाती है।

2. आय के चक्राकार प्रवाह के चित्र को देखने से यह स्पष्ट होता है कि एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र को (प्रवाह) विपरीत दिशा में होता है। वस्तुओं व सेवाओं का बहाव (प्रवाह) जिस दिशा में होता है उसकी विपरीत दिशा में मुद्रा का बहाव (प्रवाह) होता है।

3. उत्पादन के साधनों का बहाव (प्रवाह) जिस दिशा में होता है उसकी विपरीत दिशा में उत्पादन के साधनों के प्रतिफल के लिए प्राप्त मुद्रा का बहाव (प्रवाह) होता है।

आय के चक्राकार प्रवाह में वस्तुएँ/सेवाएँ उनके प्रयोग की अवधि के आधार पर वर्गीकृत की जाती हैं जो निम्न हैं:–

1. उपभोग एवं पूँजीगत वस्तुएँ

उपभोग वस्तुएँ :– वे सभी वस्तुएँ जिनका पूरा का पूरा उपभोग उनको खरीदने के बाद ही हो जाता है। उपभोग वस्तुओं के उपभोग द्वारा समाज में लोग अपनी आवश्यकताएँ संतुष्ट करते हैं। उपभोग–वस्तुएँ अन्य वस्तुओं के उत्पादन में काम में नहीं ली जाती है। सामान्यतः व्यावसायिक फर्मे सुपुर्दगी के लिए तैयार वस्तुओं व सेवाओं का भण्डारण करके रखते हैं। उपभोग–वस्तुएँ ही अन्तिम–वस्तुएँ होने के कारण राष्ट्रीय आय की गणना के लिए इनके मूल्यों का समावेश किया जाता है। उपभोग वस्तुओं व सेवाओं के उदाहरण निम्न हैं– जैसे खाने–पीने की चीजें, कपड़े, वाहन, रेड़ियो, टेलिविजन व आपकी कक्षा की पुस्तकें इत्यादि। उपभोग वस्तुओं में सेवाएँ, गैर–टिकाउ व टिकाउ वस्तुएँ सम्मिलित होती हैं। कई बार टिकाउ उपभोग–वस्तुएँ व्यावसायिक उपयोग में लेने की स्थिति में पूँजीगत वस्तुएँ कहलाती हैं।

पूँजीगत वस्तुएँ :– उत्पादन में सहायता करने वाले वे साधन (वस्तुएँ) जो टिकाउ होते हैं, पूँजीगत वस्तुएँ कहलाती हैं। पूँजीगत वस्तुओं द्वारा कई वर्ष तक उत्पादन किया जा सकता हैं। मशीन, औजार, उपकरण, भवन, बाँध, नहर, बिजली बनाने का संयन्त्र व बिजली की लाइनें इत्यादि पूँजीगत वस्तुओं पर एक देश का विकास निर्भर करता है।

2. अन्तिम एवं मध्यवर्ती वस्तुएँ

अन्तिम वस्तुएँ :– वे सभी वस्तुएँ/सेवाएँ जिनका उपभोग या उत्पादन में उपयोग किया जा सकता है। जैसे तैयार भोजन का एक उपभोक्ता उपभोग करता है। इसी प्रकार एक उत्पादक द्वारा एक पम्पसेट या ट्रेक्टर का केवल उपयोग ही किया जाता है। अर्थात कच्चे माल या मध्यवर्ती वस्तुओं के रूप में प्रयोग नहीं किया जाता है। इस प्रकार की वस्तुओं व सेवाओं को अन्तिम वस्तुएँ कहते हैं।

मध्यवर्ती वस्तुएँ :– मध्यवर्ती वस्तुएँ सामान्यतः अर्द्ध–निर्मित वस्तुएँ अथवा कच्चे माल के रूप में होती हैं। इनमें सभी प्रकार की अर्द्ध–निर्मित वस्तुएँ सम्मिलित की जा सकती है। मध्यवर्ती वस्तुओं को उत्पादन–प्रक्रिया के एक या अधिक चरणों/सोपानों से होकर निकलने के बाद अन्तिम वस्तु में बदला जाता है। पहनने हेतु तैयार कपड़ों के लिए रूई, धागा इत्यादि मध्यवर्ती वस्तुएँ या अर्द्ध–निर्मित वस्तुएँ होती हैं।

सकल निवेश एवं शुद्ध निवेश :–

इसी प्रकार आय के चक्राकार प्रवाह व राष्ट्रीय आय से सम्बन्धित कतिपय महत्वपूर्ण अवधारणाएँ निम्न हैं:– निवेश उत्पादन के लिए किया जाने वाला व्यय होता है। जब एक उत्पादक नकद धन व्यय करता है तब वह मौद्रिक निवेश कहलाता है। मौद्रिक निवेश द्वारा नयी मशीन, नया भवन, नया बाँध, नयी नहर इत्यादि बनाने पर वह वास्तविक निवेश में बदल जाता है। वास्तविक निवेश से ही उत्पादन व उत्पादन–क्षमता में सुधार होता है। निवेश दो प्रकार का होता है जैसे:– सकल निवेश व शुद्ध निवेश।

एक निश्चित अवधि (सामान्यतः एक वर्ष) में उत्पादक–पूँजीगत वस्तुओं पर जो व्यय करता है उसे सकल निवेश कहते हैं। सकल निवेश के उदाहरण हैं– नयी मशीन, नया भवन, नया बाँध, नयी नहर, नया बिजली बनाने का संयन्त्र व बिजली की लाइनें

इत्यादि की कुल मात्रा में होने वाली वृद्धि। पहले से काम में ली जा रही पुरानी मशीन, पुराना भवन, पुराना बाँध, पुरानी नहर पर मरम्मत व्यय इत्यादि भी सकल निवेश में सम्मिलित होते हैं।

सकल निवेश = शुद्ध निवेश + मूल्यह्रास

शुद्ध निवेश :– एक निश्चित अवधि (सामान्यतः एक वर्ष) में होने वाले सकल निवेश में से भौतिक पूँजीगत वस्तुओं की घिसावट की राशि को घटाया जाता है। भौतिक पूँजीगत वस्तुओं की घिसावट अर्थात् मूल्यह्रास को घटाकर शेष बचा हुआ निवेश ही शुद्ध निवेश कहलाता हैं। शुद्ध निवेश में जब वृद्धि होती है तब वास्तविक रूप में उत्पादन व उत्पादन–क्षमता में सुधार होता है।

शुद्ध निवेश = सकल निवेश – मूल्यह्रास

मूल्यह्रास :– पूँजीगत वस्तुओं में घिसावट को मूल्यह्रास कहा जाता है। घिसावट के कारण मशीन, भवन, बाँध, नहर, बिजली बनाने के संयन्त्रों की क्षमता गिर जाती है। पूँजीगत वस्तुओं की कुल क्षमता/मात्रा में होने वाली कमीं उत्पादन में उपयोग करने के कारण होती है। इस प्रकार पूँजीगत वस्तुओं की टूट–फूट/घिसावट से हानि होती है। अतः मूल्यह्रास एक प्रकार की हानि होती है। मूल्यह्रास की गणना सकल निवेश में से शुद्ध निवेश घटा कर करते हैं।

मूल्यह्रास = सकल निवेश – शुद्ध निवेश

घरेलू–सीमा व सामान्य निवासियों की अवधारणा

घरेलू–सीमा की अवधारणाः– राष्ट्रीय आय की गणना में घरेलू–सीमा की अवधारणा महत्वपूर्ण मानी जाती है। घरेलू–सीमा की अवधारणा का अर्थ एक देश की भौगोलिक–सीमा के भीतर की जाने वाली आर्थिक–क्रियाओं से होता है। अर्थात घरेलू–सीमा की अवधारणा के अर्न्तगत एक देश की भौगोलिक–सीमा के बाहर की आर्थिक–क्रियाएँ सम्मिलित नहीं की जाती हैं।

सामान्य निवासियों की अवधारणाः– सामान्य निवासियों का आशय वे लोग जिन्हें किसी देश की नागरिकता मिली हुई है। राष्ट्रीय आय की गणना में एक देश के सामान्य निवासियों की क्रियाओं से अर्जित आय ही सम्मिलित की जाती है। चूँकि एक देश में सामान्य निवासियों व अनिवासियों की आर्थिक क्रियाओं में भेद किया जाता है। इस प्रकार सामान्य निवासियों की अवधारणा का राष्ट्रीय आय की गणना हेतु बहुत महत्व होता है।

विदेशों से प्राप्त विशुद्ध साधन आय की अवधारणाः–

एक देश के आयात व निर्यात का राष्ट्रीय आय की गणना में बहुत महत्व होता है। आयात व निर्यात के द्वारा राष्ट्रीय आय की मात्रा व दिशा का पता चलता है। निर्यात की तुलना में आयात अधिक होने पर विदेशों से प्राप्त विशुद्ध साधन आय ऋणात्मक होती है। आयात पर निर्यात की अधिकता होने पर विदेशों से प्राप्त विशुद्ध साधन आय होती है। अर्थात् विदेशों से प्राप्त विशुद्ध साधन आय आयात व निर्यातों को घटाकर उनके अन्तर द्वारा ज्ञात की जाती हैं।

इस प्रकार विदेशों से प्राप्त विशुद्ध साधन आय = निर्यात – आयात । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विदेशों से प्राप्त शुद्ध साधन आय (NFIA) को घरेलु साधनों द्वारा विदेशों में अर्जित आय में से विदेशी साधनों द्वारा देश में अर्जित आय के अन्तर से ज्ञात किया जाता है।

विशुद्ध परोक्ष करों की अवधारणा :–

एक देश में होने वाले उत्पादन का मूल्यांकन बाजार कीमत (MP) पर किया जाता है। उत्पादन के बाजार कीमत पर मूल्यांकन हेतु साधन–लागत (FC) व अप्रत्यक्ष कर, (Indirect Tax) को जोड़ा जाता है। अप्रत्यक्ष कर, (Indirect Tax) जैसे वस्तु व सेवा कर (GST), को साधन–लागत (FC) में जोड़ा तथा उसमें से सरकार द्वारा दिये गये अनुदान (Subsidy) को घटाया जाता है। इस प्रकार विशुद्ध परोक्ष कर को सकल अप्रत्यक्ष कर, (Indirect Tax) में से अनुदान (Subsidy) घटाकर ज्ञात किया जाता है।

शुद्ध अप्रत्यक्ष कर **(Net Indirect Tax)** = सकल अप्रत्यक्ष कर **(Gross Indirect Tax)** – अनुदान **(Subsidy)**

वास्तविक जगत में दो क्षेत्रों के बजाय चार क्षेत्रों में राष्ट्रीय आय का चक्राकार प्रवाह (Circular Flow of Income) होता है। राष्ट्रीय आय के स्तर, रोजगार के स्तर, देश में बचत का स्तर, देश में विनियोग का स्तर, सामान्य कीमत–का स्तर, आर्थिक–वृद्धि व विकास में उतार व चढ़ाव इत्यादि का अध्ययन व्यापक अथवा समग्र स्तरों के रूप में समष्टिगत–अर्थशास्त्र में किया जाता है। राष्ट्रीय आय विभिन्न प्रकार की उत्पादक आर्थिक–क्रियाओं से उत्पन्न होती है। जैसे– पशुपालन, कृषि, उद्योग, व्यापार एवं अन्य वाणिज्यिक क्रियाएँ।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- राष्ट्रीय आय समय के दो बिन्दुओं के बीच की अवधि में एक देश की अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित प्रवाह (Flow) होता है। इसी तरह समय के दो बिन्दुओं के दिन देश की सम्पत्तियों का स्तर (भण्डार या स्कन्ध अर्थात स्टॉक) **(Stock)** कहा जाता है।
- आय के चक्राकार प्रवाह के विचारों का पहली बार फ्रांस के प्रकृतिवादी–कृषि अर्थशास्त्री फ्रेंकायज क्वीजने (Francois Quesney) ने सन् 1758 के द्वारा किया गया।
- एक सरल आय के चक्राकार प्रवाह के मॉडल में निम्न दो क्षेत्र होते हैं–1. प्रथम क्षेत्र–परिवार व 2. द्वितीय

क्षेत्र–व्यावसायिक–फर्में।

- एक देश में उत्पादन के साधन परिवार से व्यावसायिक–फर्मों की ओर/तरफ व साधन–प्रतिफल व्यावसायिक–फर्मों से परिवार ओर/तरफ जाते हैं। इस प्रकार परिवार का व्यय व्यावसायिक–फर्मों की आय व व्यावसायिक–फर्मों का व्यय परिवार की आय का निर्माण करते हैं।
- वे सभी वस्तुएँ/सेवाएँ जिनका पूरा का पूरा (प्रयोग) उपभोग उनको खरीदने के बाद ही हो जाता है। अर्थात उपभोग वस्तुओं व सेवाओं का उपभोग केवल एक वित्तीय वर्ष में ही किया जा सकता है।
- उत्पादन में सहायता करने वाले वे साधन (वस्तुएँ) जो टिकाउ होते हैं, पूँजीगत वस्तुएँ कहलाते हैं। पूँजीगत वस्तुओं द्वारा कई वर्ष तक उत्पादन किया जा सकता हैं।
- मध्यवर्ती वस्तुएँ सामान्यतः अर्द्ध–निर्मित वस्तुएँ अथवा कच्चे माल के रूप में होती हैं। मध्यवर्ती वस्तुओं को उत्पादन–प्रक्रिया के एक या अधिक चरणों/सोपानों से होकर निकलने के बाद अन्तिम वस्तु में बदला जाता है।
- निवेश उत्पादन के लिए किया जाने वाला व्यय होता है। जब एक उत्पादक नकद धन व्यय करता है तब वह मौद्रिक निवेश कहलाता है। मौद्रिक निवेश द्वारा नयी मशीन, नया भवन, नया बाँध, नयी नहर इत्यादि बनाने पर वह वास्तविक निवेश में बदल जाता है।
- निवेश दो प्रकार का होता है जैसेः– सकल निवेश व शुद्ध निवेश।
- एक निश्चित अवधि (सामान्यतः एक वर्ष) में उत्पादक–पूँजीगत वस्तुओं पर खर्च सकल निवेश तथा भौतिक पूँजीगत वस्तुओं की घिसावट अर्थात् मूल्यह्रास को घटाकर शेष बचा हुआ निवेश ही शुद्ध निवेश कहलाता हैं।
- पूँजीगत वस्तुओं में घिसावट को मूल्यह्रास कहा जाता है।घरेलू–सीमा की अवधारणा का अर्थ एक देश की भौगोलिक–सीमा के भीतर की जाने वाली आर्थिक–क्रियाएँ।
- राष्ट्रीय आय की गणना में एक देश के सामान्य निवासियों की क्रियाओं से अर्जित आय ही सम्मिलित की जाती है।
- विदेशों से प्राप्त विशुद्ध साधन आय आयात व निर्यातों को घटाकर उनके अन्तर द्वारा ज्ञात की जाती हैं।
- वास्तविक जगत में दो क्षेत्रों के बजाय चार क्षेत्रों में राष्ट्रीय आय का चक्राकार प्रवाह होता है।

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्न में से शुद्ध अप्रत्यक्ष कर ज्ञात किया जा सकता है –
   (अ) सकल अप्रत्यक्ष कर – अनुदान
   (ब) सकल अप्रत्यक्ष कर – ब्याज
   (स) सकल अप्रत्यक्ष कर – लाभ
   (द) सकल अप्रत्यक्ष कर + अनुदान
2. आय के चक्राकार प्रवाह के विचार का प्रतिपादन किसने किया ?
   (अ) फ्रेंकायज क्वीजने ने
   (ब)कार्ल मार्क्स ने
   (स) साइमन कुजनेट ने
   (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं
3. सकल निवेश में से क्या घटाने पर निवल निवेश प्राप्त होगा–
   (अ) शुद्ध ब्याज (ब) विनियोग
   (स) मूल्यह्रास (द) लाभ
4. उपभोग वस्तु का उदाहरण नहीं हैं –
   (अ) सब्जियाँ (ब) कपड़े
   (स) ब्रेड (द) सिंचाई के लिए पम्प–सेट
5. पूँजीगत वस्तुओं के उदाहरण नहीं हैं –
   (अ) मशीनें, भवन व ट्रेक्टर
   (ब) बाँध व नहरें
   (स) बिजली–संयन्त्र व बिजली की तन्त्र
   (द) खाने–पीने की चीजें व कपड़े

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

1. प्रवाह किसे कहते हैं ?
2. भण्डार या स्कन्ध किसे कहते हैं ?
3. राष्ट्रीय आय के चक्राकार प्रवाह क्या है ?
4. आय के चक्राकार प्रवाह के मॉडल के दो क्षेत्र कौन–कौन से होते हैं ?
5. मध्यवर्ती वस्तु से क्या अभिप्राय हैं ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. स्टॉक एवं प्रवाह में अन्तर कीजिए।
2. उपभोग वस्तुओं व पूँजीगत वस्तुओं में अन्तर का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
3. सकल और शुद्ध निवेश को समझाइये।

4. मूल्यह्रास के आशय को संक्षेप में समझाइये।
5. सामान्य निवासियों की अवधारणा को समझाइये।

निबन्धात्मक प्रश्न

1. आय कें चक्राकार प्रवाह को उचित रेखाचित्र की सहायता से विस्तार पूर्वक समझाइये।
2. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए ।
   अ. उपभोग वस्तुऐं
   ब. पूंजीगत वस्तुऐं
   स. मध्यवर्ती वस्तुऐं
3. निम्नलिखित में भेद कीजिए।
   अ. स्टॉक एवं प्रवाह
   ब. सकल एवं शुद्ध निवेश
   स. अन्तिम एवं मध्यवर्ती वस्तुऐं

उत्तर तालिका

1	2	3	4	5
अ	अ	स	द	द